
shrI lalitA tripurasundarI aparAdha kShamApana stotram

श्रीललिता त्रिपुरसुन्दरी अपराधक्षमापाणस्तोत्रम्

Document Information

Text title : tripurasundarI aparAdha kShamApana stotram

File name : tripurasundarIaparAdhakShamApana.itx

Category : aparAdhakShamA, devii, dashamahAvidya, lalitA, devI, panchdashI

Location : doc_devii

Transliterated by : V. Gopalakrishnan vkg at igcar.ernet.in

Proofread by : V. Gopalakrishnan and his father who is a Sanskrit scholar.

Description-comments : A Hymn of worship to Goddess Tripurasundari

Latest update : December 27, 2022

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

December 27, 2022

sanskritdocuments.org

श्रीललिता त्रिपुरसुन्दरी अपराधक्षमापाणस्तोत्रम्



श्रीगणेशाय नमः ।

ॐ क अे ऀ ल ङीं उ स क उ ल ङीं स क ल ङीं श्री ।

ॐ कञ्जमनोडर पादयलन्मणि नूपुरदंस विराजिते

कञ्जभवादि सुरौघपरिष्टुत लोडविसृत्वर वैभवे ।

मञ्जुणवाज्मय निर्जितडीर कुलेयलराज सुकन्यके

पालय डे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ १ ॥

ओषधरोज्वल झालतलोल्लस दैण्मदाङ्ग समन्विते

शोषापराग विचित्रित कन्दुक सुन्दरसुस्तन शोभिते ।

नीलपयोधर डालसुकुन्तल निर्जितभृङ्ग कदम्बके

पालय डे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ २ ॥

ठतिविनाशिनि भीति निवारिणि दानवडन्त्रि दयापरे

शीतकराङ्गित रत्नविभूषित डेमकिरीट समन्विते ।

दीप्ततरायुध भण्डमडासुर गर्व निडन्त्रि पुराम्बिके

पालय डे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ ३ ॥

लब्धवरेण जगत्रयमोडन दक्षलतान्त मडेषुणा

लब्धमनोडर सालविषण्ण सुद्रेडभुवापरि पूजिते ।

लङ्घितशासन दानव नाशन दक्षमडायुध राजिते

पालय डे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ ४ ॥

द्रीम्पद भूषित पञ्चदशाक्षर षोडशवर्ण सुद्वेवते

द्रीमतिडादि मडामनुमन्दिर रत्नविनिर्मित दीपिके ।

डस्तिवरानन दर्शितयुद्ध समादर साडसतोषिते

पालय डे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ ५ ॥

डस्तलसन्नव पुष्पसरेक्षु शरासन पाशमडाङ्कुशे

डर्यजशम्भु मडेश्वर पाद यतुष्टय मञ्च निवासिनि ।

उंसपदार्थं मलेश्वरि योगि समूहसमादृत वैभवे
पालय ले ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिडे ॥ ६ ॥

सर्वजगत्करणावन नाशन कर्त्रि कपालि मनोहरे
स्वच्छमृणाल मरालतुषार समानसुहार विभूषिते ।
सज्जनचित्त विदारिणि शङ्करि दूर्जन नाशन तत्परे
पालय ले ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिडे ॥ ७ ॥

कञ्जदण्डाक्षि निरञ्जनि कुञ्जर गामिनि मञ्जुल भाषिते
कुङ्कुमपङ्क विलेपन शोभित देवलते त्रिपुरेश्वरि ।
दिव्यमतङ्ग सुताधृतराज्य भरे करुणारस वारिधे
पालय ले ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिडे ॥ ८ ॥

उल्लङ्घ्यक पङ्कजकेतक पुष्पसुगन्धित कुन्तले
डाटक भूधर शङ्खविनिर्मित सुन्दर मन्दिरवासिनि ।
उस्तिमुभाम्भ वराडमुभीधृत सैन्यभरे गिरिकन्धके
पालय ले ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिडे ॥ ९ ॥

लक्ष्मणसोदर सादर पूजित पादयुगे वरदेशिवे
लोडमयादि बहून्नत साल निषण्ण बुधेश्वर सम्युते ।
लोचमदालस लोचन निर्जित नीलसरोज सुमालिके
पालय ले ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिडे ॥ १० ॥

द्वीमितिमन्त्र मडाजप सुस्थिर साधकमानस उंसिके
द्वीम्पद शीतकरानन शोभित उमलते वसुभारवरे ।
उर्ध्वतमोगुण नाशिनि पाश विभोचनि भोक्षसुभ्रद्रे
पालय ले ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिडे ॥ ११ ॥

सख्यिदभेद सुभामृतवर्षिणि तत्त्वमसीति सदादृते
सद्गुणशालिनि साधुसमर्थित पादयुगे परशाम्भवि ।
सर्वजगत् परिपालन दीक्षित बाहुलतायुग शोभिते
पालय ले ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिडे ॥ १२ ॥

कम्बुगणे वर कुन्दरदे रस रञ्जितपाद सरोरुडे
काममलेश्वर कामिनि कोमल कोकिल भाषिणि लैरवि ।
शित्तितसर्व मनोहरे पूरण कल्पवते करुणार्णवि
पालय ले ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिडे ॥ १३ ॥

लस्तकशोभि करोज्वल कङ्कणकान्ति सुदीपित दिङ्मुषे
शस्ततर त्रिदशालय कार्य समादृत दिव्यतनुज्वले ।
कश्चतुरोभुवि देविपुरेशि भवानि तवस्तवने भवेत्
पालय छे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिडे ॥ १४ ॥

द्रीम्भदलाञ्छित मन्त्रपयोदधि मन्थनजात परामृते
उव्यवडानिल भूयजमानक जेन्दु दिवाकररुपिणि ।
उर्यजुरुद्र मडेश्वर संस्तुत वैभवशालिनि सिद्धिदे
पालय छे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिडे ॥ १५ ॥

श्रीपुरवासिनि उस्तलसद्गर यामरवाक्कमलानुते
श्रीगुडपूर्व भवार्जित पुण्यकले भवमत्तविलासिनि ।
श्रीवशिनी विमलादि सदानत पादयलन्मणि नूपुरे
पालय छे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिडे ॥ १६ ॥

॥ इति श्रीललितात्रिपुरसुन्दरी अपराधक्षमापरास्तोत्रं सम्पूर्णं ॥

Encoded by V. Gopalakrishnan vggk at igcar.ernet.in

—
shrI lalitA tripurasundarI aparAdha kShamApana stotram
pdf was typeset on December 27, 2022

—
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

